ऋग्वैदिक काल (1500-1000 BC)

इस काल के बारे में सभी महत्पूर्ण जानकारी ऋग्वेद से मिलता है, इसलिए ऋग्वैदिक काल कहा जाता है, जिसके अन्तर्गत हमलोग निम्नलिखित बातों को शामिल कर सकते है–

सामाजिक जीवन

- वर्ण-व्यवस्था- इस समय वर्ण व्यवस्था जाति के आधार पर नहीं बल्कि कर्म के आधार पर विभाजित किया गया था। कर्म के आधार पर हो कार्यो का विभाजित होता था।

- महिलाओं की स्थिति- प्राचीन काल में महिलाओं की सबसे अच्छी स्थिति इसी काल में था। इस समय पर्दा प्रथा, सती प्रथा का प्रचलन नहीं था। महिलाएँ धार्मिक कार्य, युद्ध और मंत्रों के रचना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। यह लोग पिता की संपत्ति में भी पुत्र के समान अधिकार रखती थी।

- इस समय समाज पितृसत्तात्मक था।

  इस समय कुछ विदूषी महिला का उल्लेख भी मिलता है, जिन लोगों ने वेद के मंत्रो की रचना किया था, जैसे -लोपामुद्रा, अपाला, घोषा, सिक्ता, विश्वारा। इन लोगों को ऋषि की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

- विवाह पद्धति- विवाह का मुख्य उद्देश्य संतान की प्राप्ति था। इस समय बाल विवाह नहीं होता था। इस समय एकल विवाह, बहु-विवाह, विधवा विवाह और नियोग प्रथा का प्रचलन था। आजीवन अविवाहित रहने वाली लड़कियों को अमाजू कहा गया है।

- भेश-भूषा - इस समय सूती और ऊनी वस्त्र का प्रयोग किया जाता था, जिसमें कुछ प्रमुख है:-

  वाससस - कमर के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र

  नीवि - कमर के नीचे पहना जाने वाला वस्त्र

  अधिवास - चादर या दुपट्टा को अधिवास कहा गया है।

- आभूषण – बहुमूल्य धातु के आभूषण संपन्न लोग और कम मूल्य वाले आभूषण गरीब वर्ग के लोग धाारण करते थे, जिसमें कुछ प्रसिद्ध है:

कुरीर – माथे पर धारण किया जाने वाला।

रूक्स – वक्ष पर धारण किया जाने वाला।

निष्क – गले में धारण किया जाने वाला आभूषण

निष्क कलांतर मे सिक्का के रूप में लोकप्रिय हो गया।

कर्णशोभन- कानों में धारण करने वाला।

- सामाजिक ईकाई – इस समय संयुक्त परिवार की प्रथा था। परिवार का सबसे अधिक उम्र वाला व्यक्ति परिवार की प्रथा था। परिवार का सबसे अधिक उम्र वाला व्यक्ति मुखिया होता था, जिसकों कुलप कहा गया है। इस समय सामाजिक ईकाई का विभाजन नीचे से ऊपर की तरफ निम्नलिखित रूप में हुआ था–

जन (सबसे बड़ा) ग्राम/गोत्र कुल/परिवार (सबसे छोटा)

- ऋग्वेद में जन का उल्लेख **275** बार और विश का उल्लेख **170** बार हुआ है।
- मनोरंजन का साधन- मुख्य साधन संगीत था। इसके साथ ही पासा खेलना, घुड़-दौड़, रथ -दौड़ और पशु-पक्षियों के लड़ाई से भी मनोरंजन किया जाता था।

- खान -पान - इस काल का मुख्य खाद्य पदार्थ जौ और गेहूँ था। लोग चावल(ब्रीही) का भी प्रयोग करते थें शाकाहारी और मांसाहारी दोनो प्रकार के व्यक्ति शामिल थे। अतिथि को गाय का मांस खिलाया जाता था, इसलिए अतिथि को गोहंत्ता कहा गया। गाय को अधन्या कहा गया।

- पेय पदार्थ में सोम रस का प्रयोग किया जाता था।
- राजनीतिक जीवन- इस काल में कबीला के रूप में राजनीतिक इकाई विभाजित था, जिसका सर्वोच्च व्यक्ति राजन या गोप्ता कहलाता था। इस समय राजा का पद वंशानुगत नहीं था। राजा की सहायता देने हेतु पुरोहित, सेनानी और ग्रामीणी नामक मुख्य अधिकारी थे इसके साथ ही स्पश(गुप्तचर), उग्र/जीवगृभ (पुलिस अधिकारी), व्राजपति (चारागाह का अधिकारी) होता था।

- भरत कुल के शासक सुदास ने रावी नदी के किनारे दसराज्ञ के युद्ध में अपने विरोधियों को पराजित किया।
- इस समय पुरू, अनु, द्रहु, तुवर्सु, यदु पाँच महत्वपूर्ण जन सबसे शक्तिशाली था, जो मिलकर पंचजन कहलाते थे।

- राजा की निरंकुशता पर अंकुश लगाने के लिए तीन प्रकार की संस्था कायम थी, जैसे-

  (i) वीद्थ- यह सबसे प्राचीन संस्था थी।

  (ii) सभा - यह श्रेष्ठजनों की संस्था थी। इसके अध्यक्ष को गणधर कहा गया है। इसका स्वरूप वर्तमान के राज्यसभा के समान था।

(iii) समिति – वर्तमान में लोगसभा के समान था। इसके सदस्य आम जनता के द्वारा निर्वाचित होते थे, जिसके अध्यक्ष के ईशान कहा गया है।

- सभा एवं समिति राजा को गद्दी दिलाने में और उनको गद्दी को हटाने में अपने शक्ति का प्रयोग करती थी।इस समय राजा को जनता के द्वारा स्वेच्छा से उपहार स्वरूप जो कर प्राप्त होता था उसे बलि कहा गया।

- धार्मिक जीवन- ऋग्वैदिक काल में ईश्वर की अराधना का मुख्य उद्देश्य भौतिक सुख की प्राप्ती था। इसके अन्तर्गत अरोग्य जीवन, संतान की प्राप्ती तथा पशु संतति की बढ़ोतरी के लिए पूजा किया जाता था। ईश्वर की अराधना के लिए दो प्रकार का प्रचलन दिखलाई पड़ता है-

  (i) स्तुति पाठ करना।

  (ii) यज्ञ बलि अर्पित करना

- ऋग्वेद में **33** देवताओं का वर्णन किया गया है। इसमें कुछ महत्पूर्ण निम्नलिखित है-

(i) इन्द्र- यह ऋग्वैदिक काल के सबसे प्रमुख देवता था। इन पर **250** सूक्त लिखा गया है। इनको पुरंदर (दुर्ग का तोड़नेवाला) कहा गया है। यह युद्ध के देवता, वर्षा के देवता और विश्व के स्वामी के रूप में भी प्रचलित है।

(ii) अग्नि- इनका दूसरा स्थान था। इन पर **200** सूक्त लिखा गया है। यह मानव और ईश्वर के बीच सम्पर्क स्थापित कराने का कार्य करते थे।

(iii) वरूण- इनका तीसरा स्थान था, जिस पर **30** सुक्त है। इनकों ऋतु परिवर्तन, दिन-रात का कर्ता-धर्ता और समुद्र का देवता, सत्य का प्रतीक तथा विश्व नियामक कहा गया है।

- वरूण को पृथ्वी,आकाश और सूर्य का निर्माता माना गया है। यूनान में इनको ओरनोज और ईरान मे इनको अहुरज्मदा कहा जाता है।
- अन्य प्रमुख देवता एवं देवी:

- मरूत - आँधी तुफान के देवता।
- पूषण - पशुओं के देवता। उनके रथ को बकरा खींचता था।
- अश्विन-दुखों को हराने वाले थे।

- विष्णु- इनकों ऋग्वेद में अडगाय (गाय से जन्म लेने वाला) कहा गया है।
- भगवान शिव को रूद्र कहा गया है।
- देवीयाँ:
- उषा- प्रगति एवं उत्थान की देवी।

- अदिती एवं सूर्या नामक देवीयों का उल्लेख मिलता है।

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर हम कह सकते है कि इस काल में धार्मिक जीवन एकदम सरल था।

- आर्थिक जीवन - इसका वर्णन निम्नलिखित है-
- कृषि- इस समय जौ और गेहूँ मुख्य खाद्य फसल था। कपास के बारे में ऋग्वेद में उल्लेख नहीं मिलता है। इस काल में भी लोहे के बारे में जानकारी नहीं था।

- पशुपालन- कृषि के साथ-साथ इस काल में मुख्य व्यवसाय पशुपालन था, जिसमें गाय और अश्व को प्रमुख स्थान दिया गया था। वस्तु विनिमय में अधिकांशत: गाय का उपयोग किया जाता था।
- इस समय पशुपालन लोगों का मुख्य आर्थिक आधार था।

- वाणिज्य व्यापार- इस काल मे वाणिज्य व्यपार का बहुत अधिक विकास दिखालाई नहीं पड़ता है फिर भी सूती, रेशमी और ऊनी वस्त्र और रथ बनाने का कार्य सम्पन्न होता था। इस प्रकार ऋग्वैदिक काल की अर्थिक जीवन हड़प्पा सभ्यता के समान विकसित नहीं था। साथ ही यह एक ग्रामीण सभ्यता थी।

- महत्वपूर्ण शब्दावली - उर्वरा-उपजाऊ भूमि, लांगल-हल, पर्जन्य-बादल, अयस-ताँबा या कांसा, बेकनाट-सुद पर पैसा लगाने वाला को कहा जाता था।

उत्तर वैदिक काल (1000BC-600BC)

- इस काल मे विकास के क्रम में सभी अवस्थाओं में परिवर्तन दिखलाई पड़ता है, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है-

- राजनीतिक जीवन – ऋग्वैदिक काल के बाद इस काल में राजा का पद वंशानुगत जो गया। अब शासक पूर्व की अपेक्षा निरंकुश और काफी शक्तिशाली हो गया। अब शासक पूर्व की अपेक्षा निरंकुश और काफी शक्तिशाली हो गया था। इस काल में विदथ का नामोनिशान नहीं रहा। सभा एवं समिति कायम थी लेकिन उनका महत्व समाप्त हो गया था। अथर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है। राजा अब विभिन्न प्रकार की यज्ञ का सम्पादन करता था। जैसे-

- राजसूय यज्ञ – राज्याभिषेक के ठीक बाद इस यज्ञ को किया जाता था। राजा बारह रत्निन (मुख्य अधिकारी) का समर्थन प्राप्त करता था, जिसे कवि कहा गया।
- अश्वमेघ यज्ञ – यह यज्ञ साम्राज्य विस्तार के लिए सम्पन्न होता था।
- वाजपेय यज्ञ – इस यज्ञ को मनोरंजन के रूप में रथों का दौड़ आयोजन किया जाता था।

- इस काल खान-पान रहन-सहन वेश भूषा और मनोरंजन का साधन पहले के समान कायम था।2
- अब कर देना अनिवार्य हो गया। कर वसूल करने वाला अधिकारी भागदूध और कोषाध्यक्ष को संगृहित कहा गया है।
- इस समय शासक क्षेत्र विस्तार के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के उपाधि को धारण करते थे। इसको एवरेय ब्राह्मण के अनुसार निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है-

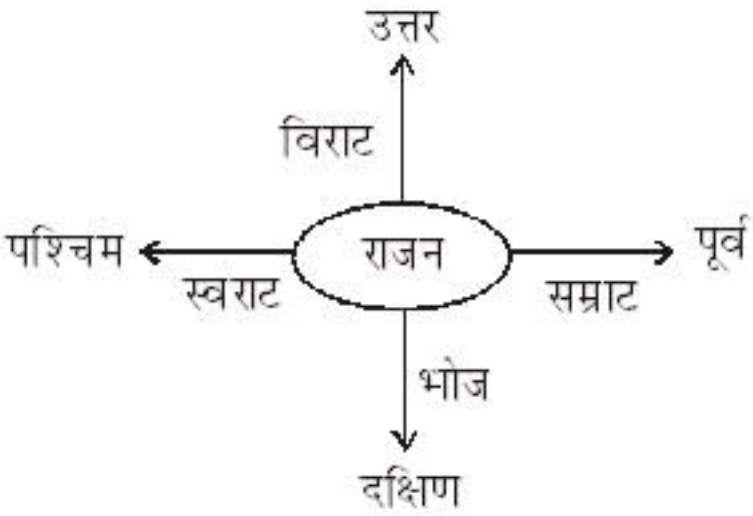
उत्तर
विराट
पश्चिम
स्वराट
राजन
सम्राट
पूर्व
भोज
दक्षिण

- जो सम्पूर्ण क्षेत्र को जीत लेता था, वह एकराट की उपाधि धारण करता था।
- धार्मिक जीवन– इस काल में धार्मिक अनुष्ठान काफी खर्चीला हो गया। अक सर्वसाधारण लोग इस कार्य को सम्पन्न नहीं कर सकते थे, क्योंकि राजसूय यज्ञ कराने वाले पुरोहित को **2,40,000** गाय दान में दिया जाता था।

- इस काल में सर्व प्रमुख देवता प्रजापति थे, जिनको सृजन का देवता माना गया है। इस समय रूद्र की पूजा अब भगवान शिव के रूप में होनें लगा। पूषण जो पहले पशुओं के देवता थे, अब शुद्रों के देवता हो गये।
- इस काल में धार्मिक कार्य के लिए अधिक संख्या में पशुओं की बलि दिया जाने लगा।

- इस काल में पुरोहितों ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया।
- सामाजिक जीवन- इस काल में ऋग्वैदिक की अपेक्षा सामाजिक जीवन में जटिलताएँ काफी अधिक बढ़ गई थीं। अब चार वर्ण की व्यवस्था स्पष्ट रूप से स्थापित हो गया।

- इस काल में सर्वप्रथम गोत्र प्रथा की स्थापना हुई, जो वंश अथवा कुल से संबंधित था।
- इस समय मुख्य खाद्य पदार्थ चावल और गेहूँ था। पेय पदार्थ में अर्जुनानी और पुतका का सेवन किया जाता था।

- इस काल में चार आश्रम की व्यवस्था किया गया। जैसे-

(i) ब्रह्मचर्य आश्रम

(ii) गृहस्थ आश्रम

(iii) वानप्रस्थ आश्रम

(iv) सन्यास आश्रम

- इस काल में महिलाओं की स्थिति में पूर्व की अपेक्षा थोड़ी से गिरावट दिखलाई पड़ता है। जैसे अब महिलाएँ सभा एवं समिति में भाग नहीं ले सकती थीं। पिता की सम्पत्ति से अधिकार खो दिया। अब उनका उपनय संस्कार प्रतिबंधित कर दिया गया। फिर भी गार्गी और मैत्रेयी नामक विदूषी महिला का उल्लेख मिलता है।

- आर्थिक जीवन – इस काल में कृषि के क्षेत्र में चावल और गेहूँ ने प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया। लोगों का जीवन अब स्थायी हो गया।
- अथर्वेद के अनुसार पृथुवैन्य ने सर्वप्रथम कृषि कार्य और हल को जन्म दिया था।

- इस काल में लगभग **1000 BC** में पाकिस्तान के गंधार क्षेत्र में सर्वप्रथम लोहा प्राप्त हुआ। भारत के संदर्भ में लगभग **800 BC** में लोहे का औजार मिलने लगा था। सबसे अधिक लौह औजार अंतरजीखेड़ा (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त हुआ।

- इस काल में चार प्रकार का मृदभांड प्रचलन में था- **(i)** काला मृदभांड **(ii)** लाल मृदभांड **(iii)** लाल-काला मृदभांड **(iv)** चित्रित धुसर मृदभांड प्राप्त हुआ है। उत्तरवैदिक कालीन संस्कृति को चित्रित धुसर मृदभांड संस्कृति भी कहा गया।

महत्वपूर्ण शब्दावली-

शब्दावली		अर्थ
श्याम या कृष्ण अयस	=	लोहा
कैवर्त	=	मछुआरा
सीर	=	हल
कर्भार	=	लोहार
तक्षण	=	बढ़ई

- अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इस काल में सामाजिक और धार्मिक जीवन में अनेक बुराईयों का समावेश हो गया था। इसमें सुधार के लिए धार्मिक सुधार आन्दोलन चलाया गया।

प्राचीन भारत की सामाजिक संरचना

प्राचीन भारत के इतिहास मे साम जिक संरचना के अन्तर्गत निम्न तथ्यों को समाहित किया जाता है-

- विवाह- मनुस्मृति में आठ प्रकार के विवाह का वर्णन है जिसमें प्रथम चार को मान्यता दिया गया है, जैसे-

  1. ब्रह्म विवाह- कन्या के व्यस्क होने पर उनके मात-पिता द्वारा योग्य वर खोजकर उसका विवाह कर दिया जाता था।

2. दैव विवाह- यज्ञ करने वाले पुरोहित के साथ विवाह कर दिया जाता था।

3. आर्य विवाह- कन्या का पिता यज्ञ कार्य हेतु वर से एक जोड़े गाय और बैल प्राप्त कर विवाह कर देता था।

4.प्रजापत्य विवाह – वर से पिता वचनबद्धता प्राप्त कर अपने कन्या का विवाह करता था, जिसे बिना दहेज का विवाह कहा गया है।

5. आसुर विवाह - इसमें कन्या का पिता धन लेकर विवाह करता था।

6. गान्धर्व - कन्या तथा वर प्रेम या कामुक्ता में अनुरक्त होकर विवाह कर लेते थे।

7. राक्षस विवाह - बलपूर्वक कन्या का अपहरण करके विवाह किया जाता था।

8. पैशाच विवाह - पागल या सोयी हुई कन्या के साथ शारीरिक संबंध बना लेने को इस विवाह की संज्ञा दी गई है।

अनुमोल विवाह - इसमें उच्च वर्ण का पुरूष अपने से ठीक नीच वर्ण की कन्या के साथ विवाह करता था।

प्रतिलोम विवाह - इसमें उच्च वर्ण की कन्या का विवाह निम्नवर्ण के पुरूष के साथ होता था।

- ऋण - प्राचीन काल में प्रत्येक व्यक्ति को तीन प्रकार ऋण का पालन करना होता था जैसे-

1. पितृ ऋण - संतान उत्पन्न कर इस ऋण से छुटकारा पाया जा सकता था।

2. ऋषि ऋण - अपने पुत्र को शिक्षित कर इससे मुक्ति मिलती थी।

3. देव ऋण - धार्मिक अनुष्ठान कर इससे मुक्ति मिलती थी।

- यज्ञ- गृहस्थों के लिए पॉच प्रकार के यज्ञ का सम्पादन किया जाता था, जो निम्न है-

  1. ब्रह्म यज्ञ- ऋषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना

  2. देंव यज्ञ - देवताओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना

3. पितृ यज्ञ - पितरों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना।

4. मनुष्य यज्ञ - अतिशि सत्कार के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना।

5. भूत यज्ञ - समस्त जीवों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना।

- प्ररूषार्थ - इसकी संख्या चार है, जैसे-

1. धर्म - सामाजिक नियम व्यवस्था
2. अर्थ - आर्थिक संसाधन
3. काम - शारीरिक सुखभोग
4. मोक्ष - आत्मा का उद्धार।

संस्कार- इसका शाब्दिक अर्थ परिषकार या पवित्रता होता है अर्थात् व्यक्ति के शरीर को परिष्कृत या पवित्र बनाने के उद्देश्य से संस्कारों का विधान बनाया गया है। इसकी संख्या सोलह है, जिसाक संक्षिप्त वर्णन निम्न है-

1. गर्भाधान – इसके अंतर्गत स्त्री गर्भ धारण करती थी, जिसके रात्रि तथा उचित नक्षत्रों का ध्यान रखना आवश्यक था।

2. पुंसवन – गर्भ की रक्षा तथा पुत्र प्राप्ति हेतु गर्भ के तीसरे माह में यह संस्कार किया जाता था।

3. सीमान्तोन्नयन- मानसिक वृद्धि हेतु सावतें या आठवें माह में यह होता था।

4. जातकर्म – इसमें पिता उत्पन्न शिशु को स्पर्श कर उसे आर्शिवाद देता था।

5. नामकरण – जन्म के दसवे या बारहवें दिन यह होता था।

6. निष्क्रमण – जन्म के चौथे माह में घर से बाहर निकाला जाता था।

7. अन्नप्रशासन – जन्म के छठे माह में प्रथम बार अन्न खिलाया जाता था।

8. चूड़ाकारण (चौल) - जन्म के तीसरे वर्ष में केश काटना

9. कर्णछेदन - तीसरे या पाँचवें वर्ष में कान छेदना।

10.विधारम्भ - गुरू के पास अक्षर ज्ञात कराना।

11. उपनयन- यज्ञोपवित धारण कर ब्रह्मचर्य आश्रम में पवित्र होना।

12. वेदारम्भ - वेद का अध्ययन प्रारंभ

13. केशन/गोदान - सोलह वर्ष की आयु में दाढी मूँछ बनाना।

14. समावर्तन - शिक्षा समाप्त कर घर लौटना।

15. विवाह - संतान प्राप्ति के लिए विवाह कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करना।

16. अन्त्येष्टि- यह मनुष्य का अंतिम संस्कार है जो

प्रमुख दर्शन		प्रतिपादक
सांख्य	–	कपिल
यांग	–	पतंजलि
न्याय	–	गौतम
वैशेषिक	–	कणाद/उलुक
पूर्व मिमांसा	–	जैमिनी
वेदांत/उत्तर मिमांसा	–	वदुरायण

- उपर्यूक्त का षड़दर्शन कहा गया है।
- चारवाक/लोकायत दर्शन- इसके प्रवर्तक चारवाक थे। इनका प्रसिद्ध कथन-जब तक जीए सुख से जिए, कर्ज लेकर भी घी पीए'।

आदिशंकराचार्य द्वारा स्थापित पीठ

पीठ का नाम		स्थान
ज्योतिष्पीठ	–	बद्रीनाथ
गोवर्धनपीठ	–	पुरी
शारदापीठ	–	द्वारका
श्रृंगेरीपीठ	–	मैसूर

सम्प्रदाय	संस्थापक
आजीवक –	मक्खलि गोसाल
घोर अक्रियवादी –	पूरन कश्यप
उच्छेदवादी – अजित-केस-कम्बली	
नित्यवादी –	पकुधकच्चायन
सन्देहवादी –	संजय वेलट्ठपुत्र